Baarta sarkar

paRTvaI iva&aana maM…aalaya

Baarta maaOsama iva&aana ivaBaaga

Baarta maaOsama iva&aana ivaBaaga

iSavaajaInagar,

paunao - 411005

भारत सरकार

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण -3 वर्ष:2016

किरणें

भारत मौसम विज्ञान विभाग
शिवाजीनगर,
पुणे - 411005

किरणें
भारत मौसम विज्ञान विभाग की
विभागीय हिंदी पत्रिका

प्रमुख संरक्षक
डॉ. के. जे. रमेश
मौसम विज्ञान के महानिदेशक

संरक्षक
श्री बी. मुखोपाध्याय
मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (अनुसंधान)

सम्पादक मंडल
डॉ. डी. एस. पै, वैज्ञानिक 'एफ'
श्रीमती लता श्रीधर, स.मौ.वि.॥
श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव, वरि.हिंदी अनुवादक
श्रीमती अपर्णा एम. खेडकर, कनि. हिंदी अनुवादक
श्री प्रमोद पारखे, कनि. हिंदी अनुवादक

मुद्रण समिति
श्री आई.जे.वर्मा, वैज्ञानिक 'ई'
श्रीमती संध्या रविकिरण, स.मौ.वि.॥

मुद्रक
विभागीय मुद्रणालय, पुणे
विशेष आभार : श्री शेखर सुर्यवंशी, वैज्ञानिक सहायक
श्री जयेश शहा, वैज्ञानिक सहायक
श्री रणधीर जगताप, वैज्ञानिक सहायक

(किरणें में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकार के हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

महानिदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

महानिदेशक की कलम से

"किरणें" का तीसरा संस्करण आपको समर्पित करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है |

आधुनिकीकरण और कंप्यूटर के इस युग में हमारी राजभाषा हिंदी का प्रयोग लगातार सरल होता जा रहा है |

"किरणें" में एक ओर रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत ज्ञानवर्धक लेख, कविताएं हिंदी भाषा में उनकी अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनी है, तो दूसरी ओर हिंदी में हमारे वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य को इतने सरल और सुबोध रुप से प्रस्तुत किया गया है कि साधारण व्यक्ति भी इनसे लाभान्वित हो सकता है ।

मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार विकास के पथ पर अपने सभी दायित्वों का निर्वाह करता हुआ भारत मौसम विज्ञान विभाग आगे बढ़ रहा है उसी प्रकार, 'किरणें' भी चहुँ ओर अपना आलोक बिखरेंगी ।

(डॉ. के. जे. रमेश)

मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक
(अनुसंधान)
पुणे - 411005

संदेश

अत्यंत हर्ष के साथ किरणें का तीसरा संस्करण आपको सौंप रहा हूँ |

उषा काल की किरणों की भाँति हमारी गृह पत्रिका किरणें छोटे छोटे कदम बढ़ाते हुए अपनी शैशवावस्था के तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रही है |

जिस रूचि व उत्साह के साथ हमारे कार्यालय के रचनाकारों ने इस पत्रिका की यात्रा में लगातार योगदान दिया और पत्रिका के सौंदर्य को बढ़ाया, वह अत्यंत प्रशंसनीय है | मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

मैं आशा करता हूँ कि आपके बहुमूल्य सुझावों और मार्गदर्शन से किरणें अपनी यात्रा इसी प्रकार आगे बढ़ते हुए अपना प्रकाश पूरे देश में फैलाएगी |

मंगल कामनाओं सहित,

(बि. मुखोपाध्याय)
मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक
(अनुसंधान)

संपादकीय

भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे की गृह पत्रिका किरणें का तीसरा संस्करण आपको समर्पित करते हुए असीमित हर्ष की अनुभूति हो रही है। जिस गति से पुणे कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी के प्रति उत्साह और साहित्य सृजन की किरणें फैल रही हैं, वह दिन दूर नहीं, जब हमारी गृह पत्रिका किरणें सूर्य की किरणों की भाँति हर ओर अपना प्रकाश फैलाएगी और विभाग और देश को गौरवान्वित करेगी।

प्रस्तुत अंक में चारों दिशाओं से आए पवन के मंद मंद झोंकों ने एक ताज़गी भरा एहसास दिलाया है। जहाँ एक ओर वैज्ञानिक लेख 'गणित मौसम विज्ञान का', में अत्यंत सरलता से मॉनसून की गतिविधियों के विषय में समझाया गया है, वहीं दूसरी ओर एक ऐसे जहाँ की तलाश की ओर कवि हृदय भटकता दिखाई दे रहा है, जहाँ केवल खुशी और सद्भाव हो। एक ओर भाषायी किरणें सभी पाठकों के छोटे-छोटे भ्रम दूर करने तथा हिंदी ज्ञान की वृद्धि करने का प्रयास कर रही हैं, तो दूसरी ओर अत्यंत सरल भाषा में जीवन के कुछ मनोवैज्ञानिक पहलुओं को छुआ गया है। साथ ही आंतकवादियों से पुछे गए कुछ सवाल मन को झकझोर देते हैं।

विविध प्रकार के मोतियों को पिरोती हुई हमारी पत्रिका "किरणें आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आपके बहुमूल्य सुझाव इस पत्रिका को और बेहतर बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे, इस आशा के साथ ....

अनुक्रमणिका

वैज्ञानिक लेख **पृष्ठ**

संख्या

1. गणित मौसम विज्ञान का : सत्ताईस से घटे नौ तो बचे शून्य 1-5
   डॉ. पी.के.नंदनकर, वैज्ञानिक 'एफ'
2. जल मौसम विज्ञान प्रभाग, पुणे – कार्य एवं दायित्व 6-12
   संकलन :डॉप्रकाश खरे, वैज्ञानिक ई"

भाषायी किरणें

3. हिंदी की विकास यात्रा और सोशल मीडिया 13-15
   कल्पना श्रीवास्तव, वरिष्ठ अनुवादक
4. आइए हिंदी सीखें, समश्रुति भिन्नार्थक शब्द 16-18
   अपर्णा एम. खेडकर, कनि.हिंदी अनुवादक

सम सामयिक रचनाएं

5. आदर्शवाद आज के युग में प्रासंगिक है 19-20
   लता श्रीधर, स.मौ.वि. ।।
6. कर्म का अनुशासन 21-22
   संध्या रविकिरण, स.मौ.वि. ।।
7. कुछ कदम प्रगति की ओर 23-25
   सौ. वृषाली जोशी, उ.श्रे.लि.
8. धन के देवता कुबेर पूजा से वंचित क्यों? 26-27
   सुष्मिता घोष उच्च श्रेणी लिपिक

9. क्यों करते हैं हम क्रोध ? 28-29
सी.पी.विजयाकुमारी, सहायक

10.तीसरी आँख 30-32
आर.एस. चौरिशी, सेवा निवृत्त स.मौ.वि ॥

11.नानी माँ की बात सुनो.....आयुर्वेदिक दोहे (संकलन) 33
मानिनी दास, सहायक

कविताएं

1. मुझे उस जहाँ की तलाश है 34-35
डॉ शिरीष खेडिकर, मौसम वैज्ञानिक श्रेणी 2

2. बारिश, धरती और वह दोनों 36
अरुण शेलके, सहायक

3. सपनों की दुनिया 37
वि.यु.देशपाण्डे, स.मौ.वि. ।।

4. खुशी 38
हरीश देशमुख, सहायक

5. मेरा परिवार 39
मीरा उमाशंकर, सहायक मौसम विज्ञानी ।।

6. एक सवाल 40
एस.के.नायर, प्रशा.अधि.॥।

7. बेटियाँ 41
प्रदीप बुधकर, स.मौ.वि.॥

उपलब्धियाँ 42

हम सबका अभिमान है हिन्दी, भारत देश की शान है हिंदी
हिन्दी
हिन्दी अपनाओ, देश का मान बढ़ाओ

गणित मौसम विज्ञान का : सत्ताईस से घटे नौ तो बचे शून्य

डॉ. पी. के. नंदनकर, वैज्ञानिक 'एफ'
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

एक जमाना था जब भारत के सी. पी. अँड बेरार मे वर्षा ऋतु प्रारंभ होती थी 7 जून को| उस दिन 2 - 4 बूंदें ही सही पर बारिश होती थी जरूर| बहुधा यही कारण था कि शालाएं लंबे अवकाश के बाद 7 जून को खुलती थीं| आज हम स्वतंत्र भारत में रहते है| हम स्वतंत्र है| इसी वजह से नियमों का पालन करने में हमारी रूचि प्राय: कम हुई है| शायद वर्षा ऋतु भी इसमें विश्वास नहीं रखती|

भारत में वर्षा मानसून से होती है| मानसून वायु प्रवाह का निर्माण क्षेत्र विषुववृत्त के परे दक्षिण गोलार्ध में है, जहाँ से वे विपरित दिशा में निकलती हैं| परंतु विषुववृत्त के पार करने के बाद वे सोने की चिड़िया वाले भारत खंड की तरफ आकृष्ट होकर नैऋत्य से ईशान्य दिशा मे प्रवाहित होकर इस पावनभूमि को मई के अंत मे चूमती हैं और भारतखंड मे वर्षा का प्रारंभ होता है| इससे स्पष्ट होता है कि मानसून भारत के मूल निवासी नहीं हैं| वे हमारे लिए विदेशी हैं, इसलिए 4 – 6 महीने तक हमारे मेहमान बने रहते और उस काल में पूरे देश में भ्रमण करते हैं| उनकी एक बात अच्छी है कि उनको भारत में आना तथा रहना सुहाता है, इसी कारण हजारों वर्षों से भारत में निरंतर आते रहे हैं| जब योरोप – एशिया की भूमि का तापमान हिंद महासागर के बनिस्पत कुछ ज्यादा होता है, तब विरल दबाव का क्षेत्र इधर निर्माण होने के कारण अपने प्रकृति के अनुसार मॉनसून इस क्षेत्र की तरफ हर साल नियत समय में भारत की तरफ प्रस्थान करता है| तापमान में जो अंतर पाया जाता है, उस पर मॉनसून की गति निर्भर होती है, जिस पर वर्षा की मात्रा भी लगभग निर्भर रहती है|

सर एडमंड हेले नामक वैज्ञानिक ने प्रथमत: मॉनसून की गतिविधियों का अध्ययन 1886 में किया जिस कारण हमारे मेहमान का भारत आने के समय का अंदाजा होता है|

भारतीय उपखंड मे, जो कृषि प्रधान है, हमारे किसान की एक आँख हमेशा मॉनसून की वर्षा पर टिकी रहती है, जिसके भरोसे से अनाज की पैदावार होती है| इस मॉनसून की हवाओं को ट्रेड विंड भी कहते हैं| पुराने जमाने में समुद्र में जहाजों के अवागमन में ये सहायक होती थीं|

भारत उपमहाव्दीप में मॉनसून जलवायु के प्रभाव से वर्षा होती है| यहाँ दो प्रकार के मॉनसून प्रवाह बहते हैं| गर्मियों मे अंत तक उत्तरी भारत पर हवा का निम्नदाब स्थापित होने के कारण सागरीय क्षेत्रों के उच्चदाब से सागरीय हवाएं भूमि की तरफ अग्रसर होती हैं| ये हवाएं नम और उष्ण होने के कारण वर्षा उत्पन्न करने की क्षमता रखती हैं| यह प्रवाह ग्रीष्म मॉनसून या दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून कहलाता है और भारत में होने वाली वर्षा का मुख्य स्त्रोत है| इसकी अवधि जून से सितंबर तक होती है| यह अवधि स्थान विशेष पर निर्भर करती है, जैसे अंडमान व्दीप में मॉनसून अभ्युदय की तिथि 20 मई होती है और बंगला देश में 1 जून है| इससे जो पश्चिमोत्तर भारत मे निम्न दाब प्रभाव क्षेत्र बनता है, उसके कारण अरब सागरीय शाखा का अभ्युद्य केरल तट पर जून के प्रथम 2 – 3 दिनों में होता है और भारत मे मॉनसून वर्षा का प्रारंभ होता है| वर्षा उत्तर-पूर्वी दिशा पकड़ कर आगे बढ़ती है| इसी कारण पश्चिमोत्तर भारत में ग्रीष्म मॉनसून काल जुलाई से सितंबर तक पाया जाता है तथा पश्चिम राजस्थान, कच्छ में मॉनसून देर से, यानि 15 सितंबर तक पहुँचता है|

वैज्ञानिकों का यह प्रयत्न रहा है कि वे मॉनसून के क्रियाकलापों को समझें और मॉनसून का पूर्वानुमान सही ढंग से कर सकें| इस के लिए वे आजकल नौ परामापी का अध्ययन करते हैं और इससे सही निष्कर्ष प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं| अर्थात आज यह निष्कर्ष एक बडे भू भाग प्रदेश, प्रांत, देश के लिए लगभग सही होता है| परंतु छोटे भू भाग या गाँव के लिए नहीं| इससे मिलने

वाले आँकड़ों से वर्तमान में ऐसा निष्कर्ष निकालना दूभर होता है| इसी कारण मौसम विज्ञान विभाग से मिली हुई जानकारी किसान के लिए पर्याप्त नहीं होती है| वैसे, आजकल एस.एम.एस. के माध्यम से किसान मौसम विज्ञान विभाग से कुछ जानकारी अवश्य प्राप्त करते हैं- जैसे मौसम विज्ञान विभाग के साधन संसाधन मे वृद्धि होगी, वैसे-वैसे मौसम के आँकलन मे अचूकता प्राप्त होगी और किसान भविष्य में उसका लाभ उठा पायेंगे|

आज किसान अपने पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त की हुई जानकारी, ज्ञान पर निर्भर रहता है, यह ज्ञान किसान को खेती संबंधी निर्णय लेने में सहायक भी होता है| हमारे प्रदेश में इसी संदर्भ में कुछ मुहावरे/कहावतें प्रचलित हैं जिसमे किसान को मार्गदर्शन मिलता है| ये मुहावरे/कहावतें अर्थात नक्षत्रों से संबंधित हैं, जिसकी चर्चा हम संक्षेप में आगे करेंगे|

इससे पूर्व हम नक्षत्रों की बात करेंगे| भारतीय कालगणना में नक्षत्र मूल रूप से महत्वपूर्ण हैं जिनकी संख्या 27 है, जो एक वर्ष के काल में परिगणित होते हैं| इस कारण एक नक्षत्र अंदाजन 14 - 14 दिन का होता है| एक नक्षत्र के 4 चरण होते हैं, जिनका कार्यकाल 3 या 4 दिन का होता है| वर्षा ऋतु काल में इन मे से मुख्यत: 9 नक्षत्र सम्मिलित होते हैं| वे हैं मृग, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा, उत्तरा और हस्ता| भारत कृषि प्रधान देश होने तथा अधिकतम किसान सिंचन व्यवस्था से वंचित रहने के कारण वह मॉनसून की वर्षा पर निर्भर रहता है| 9 नक्षत्रों में ठीक-ठाक वर्षा न हो तो सूखे के कारण भारत की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल हो सकती है| गणित के अनुसार 27 - 9 =18 होते है, परंतु वर्षा ठीक न होने पर मौसम विज्ञान के अनुसार 27 – 9 = 0 बाकी रहता है और यही भारत के गरीब किसान का वास्तव है|

रोहिणी नक्षत्र का प्रारंभ 24/25 मई में जब सूर्य रोहिणी में प्रवेश करता है, तब होता है| इस नक्षत्र की वर्षा मॉनसून पूर्व होने से अनियमित तथा आंधी गर्जन के साथ होती है| इसका विश्वास नहीं कर सकते| इस कारण हमारा किसान कहता है, रोहिणीत पेरणी होई निराशा येई मृग के पहिले (मृग प्रारंभ

7 – 8 जून) बुवाई करके निराशा ही हाथ आती है| वही किसान मृग के लिए करता है मृगाचे पाणी शेतकर्याला सोन्यावाणी मृग की वर्षा सोने समान मूल्यवान होती है| इसमें बुवाई कर हस्त नक्षत्र में (प्रारंभ 26 – 27 सितंबर) अच्छी फसल प्राप्त कर सकते हैं| इसके लिए किसान कहता है कि, "पडला हस्त तर पिक मिळे मस्त" किसान यह भी कहता है कि, "दडे रोहिणीवाजे मृग, आर्द्रात पाण्याला पुर" अगर रोहिणी में वर्षा नहीं होती, मृग में अच्छी होती और आर्द्रा में (प्रारंभ 21 -22 जून) भी तब अच्छी वर्षा से अच्छे फसल की संभावना बढ़ती है| किसान कहता है पड्तील स्वाती तर मिळतील मोती , पर मिळणार नाही कापसाच्या वाती कपास, जो इस प्रदेश में बहुतायत होता है, इस के लिए स्वाति में हुई वर्षा नुकसान देह होती है| वैसे एक मान्यता के अनुसार सागर में 6 सीप स्वाति नक्षत्र के वर्षा की बूंद धारण करती है तो उससे मोती बनता है | परंतु इस वर्षा से कपास की फसल पूरी तरह बर्बाद होती है, और दिया-बाती के लिए भी कपास प्राप्त नहीं होता|

आगे किसान कहता है कि आश्लेषात सुटली कुरटी, तर कुडवाल खंडी अगर अच्छी वर्षा से इस नक्षत्र में (प्रारंभ 2 – 3 अगस्त) भात के रोपों की बुवाई होती है तो धान की फसल अच्छी मात्रा में प्राप्त होती है| कुडव पुराना नाप 32 सेर (8 पायली) का होता है तो खंडी 20 कुडव का नाप होता है|

भरपुर पड्तील उत्तरा, तर भात खाईन कुत्रा |
न पडतील उत्तरा, तर भात मिळेना पितरा ||

इसका अर्थ है की अगर उत्तरा की वर्षा अच्छी हो तो धान की फसल बहुत अच्छी होती है| पर इस के विपरीत उत्तरा नक्षत्र (प्रारंभ 13 सितंबर) में वर्षा नही हुई तो इन्सान को धान (चावल) के लिए तरसना पड़ता है| वह पूर्वजों को भी (चावल) भात का प्रसाद चढ़ा नहीं पाता|

मॉनसून हमारी पूंजी है, जिसके सही लागत पर फसल निर्भर होती है| इस संदर्भ में किसान कहता है चित्रा (प्रारंभ 16 – 17 अक्तूबर) स्वाति और

विशाखा (प्रारंभ 5 नवंबर) इन नक्षत्रों में अगर वर्षा होती ही नहीं, तो जो भी धनसंग्रह आपके पास है इसे बेकार समझिए, इस स्थिति में समझदारी इसी में है कि आपके पास का पुराने अनाज का संग्रह तब उससे भी मूल्यवान होगा|

किसान कहता है पडला पुस तर लावा उस (पुष्य प्रारंभ 19 – 20 जुलाई) गन्ने की खेती करिएगा, फायदेमंद रहेगी| इसी प्रकार हस्त नक्षत्र में वर्षा अच्छी होती है तो अच्छे फसल के आसार होते हैं|

इसी विषय पर किसान आपको आगाह करता है कि खेत की धुरा अच्छी स्थिति में होनी चाहिए, नहीं तो मिट्टी का अपरक्षण होकर फसल बरबाद होगी|

इस चर्चा के बाद, आप भी सहमत होंगे कि वर्षा अगर सही मात्रा में सही समय में होती है तो किसान को अच्छी फसल की प्राप्ति हो सकती है| लेकिन मॉनसून प्रवाह से प्राप्त होने वाली वर्षा प्राय: अनियमितता से पीड़ित होने की वजह से किसान हर साल मौसम की मार झेलता रहता है| इसी कारण वह स्थितिप्रज्ञ होकर मौसम समस्या का सामना करता रहता है| इस परिप्रेक्ष्य में गणित का समीकरण बिखर जाता है और फिर मौसम विज्ञान के समीकरण के अनुसार अगर वर्षा ऋतु ने धोखा दिया तो हमारे किसान के हाथ में पड़ता है सिर्फ़ सिफर| 27 नक्षत्र से 9 वर्षा के नक्षत्र घट जाने से बचता है तो एक शून्य| 27 – 9 = 0| इसी कारण से मौसम विज्ञान विभाग के पूर्व महानिदेशक श्री केलकर जी ने सुझाव दिया था कि वर्षा कालीन बजट सत्र मॉनसून के सही आँकलन के बाद यानि अक्तूबर – नवंबर में लिया जाए, जिससे भारतीय अर्थ-स्थिति का अंदाज का आँकलन सही होकर बजट में किए गये आँकलन बदलने की जरूरत नहीं पडेगी| बजट सत्र आगे करने में कुछ समस्याएं हैं, यह अलग बात है| अस्तु.

जल मौसम विज्ञान प्रभाग, पुणे – कार्य एवं दायित्व

संकलन: डॉ. प्रकाश खरे, वैज्ञानिक "ई"
सहयोग: श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव एवं अपर्णा खेड़कर
अपर महानिदेशक का कार्यालय (नुसन्धानअ), पुणे

भारत मौसम विज्ञान विभाग में, जल मौसम विज्ञान का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। अपर महानिदेशक (अनुसंधान) पुणे के कार्यालय में भी जलवायु एप्लिकेशन समूह के अंतर्गत हम जल मौसम विज्ञान के विभिन्न कार्य करते हैं। इसमें शामिल हैं :

1. **जल मौसम विज्ञान डिवीज़न और**

2. **सूखा निगरानी इकाई**

जल मौसम विज्ञान

अपर महानिदेशक (अनुसन्धान), [ए डी जी एम (आर)] पुणे के कार्यालय में जल मौसम विज्ञान प्रभाग का गठन, फ़रवरी 1947 के दौरान किया गया था। यह प्रभाग, देश के सभी राज्यों के वर्षा पंजीकरण अधिकारियों के साथ संपर्क बनाए रखता है, और पूरे भारत में वर्षा का डेटा एकत्रित करने का एकमात्र केंद्र है।

क्रियाकलाप :

प्रभाग में 29 राज्य वर्षा पंजीकरण प्राधिकरणों (Rainfall Registration Authorities) के साथ समन्वित रूप से कार्य किया जाता है। देश में लगभग 8000 गैर विभागीय वर्षामापी केंद्रों से दैनिक वर्षा के आँकड़े सीधे राज्य प्राधिकरणों से प्राप्त होते हैं। इन आँकड़ों की छानबीन करके अभिसंग्रहण हेतु उपयुक्त रूप से प्रक्रिया की जाती है।

1. सभी प्रकारके विभागीय तथा जल मौसम वेधशालाओं, जिनकी संख्या 1000 से अधिक है, ऐसी वेधशालाओं से प्राप्त विलम्बित आँकड़ों की छानबीन तथा प्रक्रिया की जाती है। इन आँकड़ों की छानबीन करके अभिसंग्रहण किया जाता है।

2. जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड के 47 हिम मापी केंद्रों से प्राप्त दैनिक हिमपात के आँकड़ों का कुंजीयन (keying), प्रक्रिया तथा अभिलेखन किया जाता है।

   सभी वर्षामापी केंद्रों के मौसम संबंधित आँकड़ों को तैयार करके उन्हें अद्यतन रखा जाता है। जब भी कोई नया केंद्र स्थापित किया जाता है, उसके सभी विवरण संबंधित प्राधिकारियों से एकत्र किए जाते हैं तथा मौसम आँकड़ों की फाइल अद्यतन की जाती है।

   वर्ष 1990 से जिलावार वर्षा मॉनिटरन एकक (डी आर एम एस) कार्यरत है। इस योजना के अंतर्गत लगभग 3000 स्टेशनों के दैनिक वर्षा के आँकड़े भी अभिसंग्रहण हेतुएकत्र करके छानबीन तथा प्रक्रिया की जाती है।

   प्रभाग का एक महत्त्वपूर्ण कार्य वर्षा प्रसामान्य (rainfall normal) तैयार करना है। वर्षामापी केंद्रों के विविध अवधियों के दैनिक संचित वर्षा प्रसामान्यों पर कार्य किया जाता है। इसके साथ ही जिलों, उप जिलों,

राज्यों तथा देश के मासिक, ऋतु के तथा वार्षिक, वर्षा प्रसामान्य तथा वर्षा के दिनों पर 1901-50, 1901-70, 1941-90, 1951-2000 के लिए कार्य किया गया है। वर्तमान समय में 1951-2000 वर्षा प्रसामान्य, प्रचालन उपयोग में हैं।

उप मंडलों तथा पूरे देश के वर्ष 1875 से वर्तमान तक की वर्षा के आँकड़ों पर कार्य पूर्ण किया गया है तथा उसकीजानकारी उपयोगकर्ताओं के लिए अभिसंग्रहित की गई है। इस श्रंखला को नियमित आधार पर अद्यतन किया जांता है।

जिलावार वर्षा मॉनिटरन स्कीम (डी आर एम एस) जिलों के आँकड़ों के आधार पर चारों ऋतुओं के तथा वार्षिक आधार पर प्रतिशत विचलन चार्ट नियमित रूप से तैयार किए जाते हैं तथा विभागीय तथा गैर विभागीय उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराए जाते हैं।

जल मौसम अनुभाग, पुणे में मुख्यालय तथा तथा संबंधित प्रा.मौ.के./ मौ.के. से जिलावार वर्षा मॉनिटरन योजना के आधार पर (1990 से लगातार) जिलावार तथा उप मंडल वार वर्षा के मासिक, ऋतु तथा वार्षिक आँकड़े प्राप्त किए जाते हैं, जिन्हे राष्ट्रीय आँकड़ा केंद्र में अभिसंग्रहित किया जाता है।

विभिन्न समयों तथा स्थानिक पैमाने पर (नदी द्रोणी सहित) वर्षा के आँकड़ों का विशलेषण किया जाता है तथा वर्षा की परिवर्तिता तथा प्रवृत्ति , इसकी चरम सीमा का अध्ययन तथा मुख्य रूप से भारत की मुख्य नदियों के द्रोणी जल मौसम का प्रकाशन करना|

समय समय पर विभिन्न स्थानिक तथा कालिक पैमानों पर वर्षा तथा वर्षा की चरम घटनाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर सरकारी तथा गैर सरकारी उपयोगकर्त्ताओ को सूचना उपलब्ध कराना|

सूखे का मॉनिटरन तथा अनुमान

अ) मानकीकृत वर्षण सूचकांक (एस पी आई) का उपयोग करते हुए सभी उपलब्ध जिलों के लिए सूखे का मॉनिटरन तथा साप्ताहिक और मासिक आधार पर वास्तविक काल के निकट (नियर रियल टाईम) में मानकीकृत वर्षण सूचकांक (एस पी आई) मानचित्र तैयार करना|

ब) मानसून सत्र के दौरान मानकीकृत वर्षण सूचकांक (एस पी आई) के माध्यम से साप्ताहिक सूखे का अनुमान लगाना|

स) दक्षिण-पश्चिम मॉनसून तथा उत्तर-पूर्वी मॉनसून के दौरान भा.मौ.वि.वि. के मल्टीमॉडल पूर्वानुमान वर्षा के आँकड़ों के आधार पर सूखे के दृष्टिकोण के मानचित्र तैयार किए जाते हैं | शीघ्र चेतावनी हेतु भा.मौ.वि.वि. के पुणे के वेबसाइट पर अपलोड किए जाते हैं।

प्रक्रिया / कार्यविधि

दैनिक वर्षा / हिमपात की छँटनी तथा प्रक्रिया

1. विविध सरकारी तथा गैर सरकारी (राज्य सरकार की संस्थाओं) से अधिकांशतः सॉफ्ट कॉपी में वर्षा के आँकड़े प्राप्त किए जाते हैं, परंतु कुछ विभागीय तथा राज्य सरकार के प्राधिकरणों द्वारा (हस्तलिखित) रूप में आँकड़े भेजे जाते हैं।

2. तत्पश्चात इन आँकड़ों की छँटनी की जाती है तथा स्टेशनों के मौसम आँकड़े भी सम्मिलित किए जाते हैं और 127 बाइट के अभिसंग्रहण प्रारूप में परिवर्तित किए जाते हैं।

3. इसके पश्चात इन पर गुणवत्ता की जाँच प्रोग्राम किया जाता है तथा पाई गई त्रुटियों की फाइलों को संबंधित प्रा.मौ.के., मौ.के. तथा राज्य सरकार के प्राधिकरणों को पुष्टि हेतु वापस भेजा जाता है। अंत में शुद्ध आँकडों को अभिसंग्रहण हेतु राष्ट्रीय आँकड़ा केंद्र (एन.डी.सी) में भेजा जाता है।

4. 47 हिममापी केंद्रों से प्राप्त हिमपात के आँकड़े हाथ से पंच किए जाते हैं।

प्रसामान्य वर्षा : 1951 – 2000 के कालावधि तक के वर्षा प्रसामान्य के अभिकलन हेतु कार्यप्रणाली

वर्षामापी केंद्रों, जिलों, राज्यों, उप-मंडलों तथा पूरे देश के 1901-70, 1941-90, 1951-2000 की अवधियों के आँकड़ों के आधार पर दैनिक वर्षा प्रसामान्य अभिकलित किए जाते हैं। वर्षा प्रसामान्य प्रत्येक 10 वर्ष में अद्यतन किए जाते हैं।

1. नियत नेटवर्क तैयार करना

1951-2000 की अवधि के पिछले कम से कम 30 वर्षों के वर्षा के आँकड़ों की उपलब्धता वाले स्टेशनों का एक नेटवर्क तैयार किया जाता है तथा भारत के 641 जिलों का प्रतिनिधित्व करने हेतु एक समान सघनता बनाए रखी जाती है।

2. स्टेशनों के दैनिक प्रसामान्य

प्रत्येक स्टेशन के सभी 365 दिनों के दैनिक वर्षा प्रसामान्य की गणना की जाती है। यह 1951-2000 की अवधि में प्रत्येक तिथि का साधारण औसत होता है। उदाहरण के लिए किसी स्टेशन के किसी अवधि के दौरान सभी उपलब्ध दैनिक मानों का योग करके उसे मानों की संख्या से भाग देते हैं।

3. जिला दैनिक प्रसामान्य

यह संबंधित जिले के प्रत्येक तिथि के दैनिक वर्षा प्रसामान्यों का साधारणऔसत होता है।

4. उप-मंडल/राज्य दैनिक क्षेत्र भारित प्रसामान्य :

उप मंडल / राज्य में जिला दैनिक प्रसामान्य तथा इसके क्षेत्र के आधार पर दैनिक क्षेत्र भारित प्रसामान्य की गणना की जाती है।

5. चार एकरूप क्षेत्र तथा सम्पूर्ण भारत:

यह क्षेत्र में उप मंडल के दैनिक प्रसामान्य तथा इसके क्षेत्र के आधार पर अभिकलन किए गए दैनिक भारित प्रसामान्य हैं।

अंत में प्रत्येक स्टेशन, जिला, राज्य, उपमंडल, एकरूप क्षेत्र तथा संपूर्ण भारत के दैनिक संचित वर्षा प्रसामान्यों की गणना की जाती है। दैनिक वर्षा प्रसामान्यों से इनके मानों को जोड़कर मासिक, ऋतु तथा वार्षिक वर्षा प्रसामान्यों को प्राप्त किया जाता है। विभिन्न अवधियों जैसे 1901-70, 1941-90 , 1951-2000 के आँकड़ों के आधार पर वर्षामापी केंद्रों, जिलों, राज्यों, उप-मंडलों तथा सम्पूर्ण भारत के दैनिक वर्षा प्रसामान्यों का अभिकलन किया जाता है। वर्षा प्रसामान्य प्रत्येक 10 वर्ष में अद्यतन किए जाते हैं। इसके साथ ही जब भी नए जिले बनाए जाते हैं, इन नए जिलों के वर्षा प्रसामान्यों का भी अभिकलन किया जाता है।

एस.पी.आई. पर आधारित सूखा मॉनिटरन तथा अनुमान

कार्यप्रणाली :

एस.पी.आई का अभिकलन मासिक समय पैमाने पर किया गया था। उक्त अभिकलन दो प्राचलों गामा वितरण कार्यविधि पर आधारित था। वर्षा के आँकड़ों को लॉग सामान्य 9 लॉग नॉर्मल) मानों में रूपांतरित करके यू स्टेटिस्टिक्स आकार तथा गामा वितरण के पैमानों के प्राचल का अभिकलन किया गया है। परिणाम स्वरूप प्राप्त प्राचलों का उपयोग प्रेक्षित वर्षा की घटना की गामा संचित सम्भावना का पता लगाने के लिए किया गया। इसके बाद अपूर्ण गामा संचित संभावना में से शून्य वर्षा की घटनाओं वाली स्थितियों को सम्मिलित करके गामा संभावना में परिवर्तित किया गया। गामा

संभावना को सम-संभावना रूपांतरण तकनीक (एब्रामोविट्ज़ तथा स्टीगन 1965) का उपयोग करके मानकीकृत प्रसामान्य वितरण में रूपांतरित किया गया। एस.पी.आई की विविध श्रेणी निम्नलिखित हैं:

अ) सभी उपलब्ध जिलों के मासिक तथा संचित मानकीकृत वर्षण सूचकांक (एस पी आई) की गणना मौसम विज्ञान के महानिदेशक (जल मौसम) कार्यालय से प्राप्त मासिक जिला वर्षा के आँकड़ों के आधार पर की जाती है| इन आँकड़ों को वांछित प्रपत्र में परिवर्तित किया जाता है तथा इस पर एस.पी.आई प्रोग्राम किया जाता है, तथा वांछित समयावधि के एस.पी.आई मूल्य प्राप्त किए जाते हैं| इस प्रकार प्राप्त मूल्यों को स्वदेशी विकसित सॉफ्टवेयर से भारत के जिला मानचित्र पर श्रेणी-वार अंकित किया जाता है| इन मानचित्रो को जलवायु मॉनिटरन हेतु वास्तविक समय के आधार के निकट (नियर रियल टाईम) पर प्रत्येक माह तैयार किया जाता है|

ब) इसी प्रकार सभी उपलब्ध जिलों के चार सप्ताहों के संचित मानकीकृत वर्षण सूचकांक (एस पी आई) की भी मौसम विज्ञान के महानिदेशक (जल मौसम) कार्यालय से प्राप्त साप्ताहिक जिला वर्षा के आँकड़ों के आधार पर प्रत्येक सप्ताह गणना की जाती है| इस प्रकार तैयार एस.पी.आई. मानचित्रों का उपयोग साप्ताहिक कृषि मौसम परामर्श तैयार करने में किया जाता है|

स) मॉनसून सत्र के दौरान प्रत्येक सप्ताह (शुक्रवार को) , आने वाले बुधवार को समाप्त होने वाले सप्ताह के लिए चारों सप्ताहों के संचित एस.पी.आई. पूर्वानुमान तैयार किए जाते हैं, जिन के द्वारा वर्तमान के तीन सप्ताहों के लिए वास्तविक आँकड़ों का तथा आगामी सप्ताह के लिए अंकीय मौसम पूर्वानुमान (एन.डब्ल्यू.पी.) उत्पादों जैसे जी.एफ.एस./ एम.एम.ई. द्वारा तैयार किए गए अनुमानित आँकड़ों का उपयोग करते हुए, जिलों, राज्यों के उन क्षेत्रों की पहचान की जाती है जहाँ प्रचलित या चरम/ भीषण/ मध्यम/ शुष्क/आर्द्र स्थितियों का आरम्भ या समापन होता है।

.....

हिंदी की विकास यात्रा और सोशल मीडिया

कल्पना श्रीवास्तव, वरिष्ठ अनुवादक
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

आज की तारीख में विश्व के लगभग एक अरब लोग हिंदी में बड़ी आसानी से बात कर सकते हैं, तथा इससे लगभग दो गुनी संख्या हिंदी समझने वालों की है। विकास के पथ पर आगे बढ़ते हुए आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाते हुए हिंदी विश्व-मंच पर आसीन होने के पथ पर अग्रसर है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक संबंधों के विस्तार के लिए भारत में असीमित संभावना को देखते हुए हिंदी समझना और सीखना अनिवार्य बनता जा रहा है।

हिंदी की इस विकास यात्रा में अन्य क्षेत्रों के योगदान के अतिरिक्त जिस क्षेत्र का असीमित योगदान है, वह है – सोशल मीडिया, जिसकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

सोशल मीडिया का योगदान साधारण बोलचाल की हिंदी को विश्व के कोने कोने तक पहुँचाने में सफल रहा है, फिर चाहे वे फिल्मों के डायलॉग हों या विज्ञापनों के प्रचार या फिर चुनावों के लोक लुभावन नारे जो तीन-चार वर्ष के बच्चे की भी ज़ुबां पर चढ़े रहते हैं।

मीडिया का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसके अंतर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, विज्ञापनों के पैम्फलेट आदि आते हैं तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो, टीवी, फिल्में, चुनाव प्रचार के लोक लुभावन नारे तथा सबसे अधिक पैठ बनाती हुई व्यापारिक क्षेत्र की रीढ़ की हड्डी यानि विज्ञापनों की दुनिया, जिसने बच्चे, बूढ़े, देश-विदेश, सभी को अपने मोहपाश में जकड़ रखा है। इन सबसे इतर एक अन्य रूप जो तेजी से अपनी पहचान बना रहा है वह है

- सोशल मीडिया, जिसका स्वरूप दिन प्रति दिन व्यापक होता जा रहा है। सोशल मीडिया यानि फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, इंटरनेट जैसे अत्याधुनिक माध्यमों को साथ लेते हुए इसका हाल का ही एक उदाहरण है, हिंदी फीचर फिल्म 'बजरंगी भाईजान, जिसमें पत्रकार की भूमिका निभाते हुए एक चरित्र चाँद नवाब जिन्होनें इतनी बड़ी समस्या को हल करने में अपने स्तर से सोशल मीडिया का प्रयोग किया।

इसका एक कारण यह भी है कि सोशल मीडिया भाषा का सबसे उर्वर क्षेत्र होता है। तमाम बंधनों और सीमाओं को तोड़कर एक साधारण व्यक्ति भी अपनी बात सोशल मीडिया द्वारा जनता तक पहुँचा सकता है। आजकल सैंकड़ों टीवी चैनल आ जाने से हिंदी का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है।

सरकार द्वारा जन साधारण को कोई संदेश देना हो तो उसका भी एक सशक्त माध्यम सोशल मीडिया बन गया है - जैसे –

पढ़ेगा इंडिया तभी तो बढ़ेगा इंडिया, बेटी बचाओ, देश बचाओ, "दो बूंद जिंदगी की, घर में शौचालय बनवाओ, ज़िंदगी के साथ भी----- ज़िंदगी के बाद भी आदि जो थोड़े शब्दों में अपना संदेश जनता तक पहुँचाने में कामयाब रहे हैं।

विज्ञापन की दुनिया तो अत्यंत निराली है। मात्र 30 सेकेंड़ या एक मिनट में अपने उत्पाद की ओर हमें आकर्षित करने के लिए सबसे अधिक परिश्रम उन्हें ही करना पड़ता है, जैसे - डिप नहीं किया तो चाय क्या पिया, ढूंढते रह जाओगे, हक से मांगो, घर बनता है सपनों से, अपनों से और एशियन टाइल्स से आदि सुनते ही हमें तुरंत उससे जुड़े उत्पाद याद आ जाते हैं।

अनेक विदेशी कम्पनियाँ भी व्यापार हेतु भारत में असीमित संभावनाओं को देखते हुए भारत को श्रेष्ठ विकल्प के रूप में देखते हुए हमारी ओर आकर्षित हो रही हैं और इसके लिए उन्हें अपने उत्पाद के विज्ञापन के लिए हिंदी को चुनना ही पड़ता है - जैसे "पहले मैं बहुत मोटा था...

हिंदी फिल्मों और धारावाहिकों को जितने चाव से भारत में देखा जाता है, लगभग उतने ही चाव से विदेशों में भी इनको देखा और सराहा जाता है। हिंदी फिल्मों के डायलॉग जब हम किसी विदेशी के मुँह से उसके अंदाज़ में सुनते हैं, जैसे – "कितने आदमी थे या बसंती , इन कुत्तों के सामने मत नाच या फिर थप्पड़ से डर नहीं लगता", ये ढाई किलो का हाथ... या पुष्पा... आई हेट टीयर्स या फिर सही पकड़े हैं तो हमें इनकी वहाँ लोकप्रियता का अंदाज़ लगता है।

आजकल चुनाव प्रचार के दौरान अपनाए जाने वाले हथकंडों में जो सबसे प्रमुख है वह है लोक लुभावन नारे, जो घर घर में बच्चे- बूढ़े, सबकी ज़ुबां पर चढ़ जाते हैं, जैसे – सबका साथ – सबका विकास, हर हर मोदी - घर घर मोदी, अबकी बार- मोदी सरकार आदि।

रही सही कमी, जो 15 - 20 वर्षों पूर्व तक हिंदी लिखने में होती थी, उसे भी यूनिकोड ने दूर कर दी है। आज सामान्य व्यक्ति भी अपनी भावनाएं स्वतंत्र रूप से सोशल मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुँचा पा रहा है।

यदि हम यह कहें कि यह सब सूचना क्रांति की देन है, तो गलत नहीं होगा। सूचना क्रांति और कंप्यूटर और यूनिकोड के आने से हिंदी के विस्तार को पंख लग गए हैं।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया बढ़ने के साथ जहाँ एक ओर सब कुछ सिमटता जा रहा है, वहीं हिंदी सिमटने के बजाए और अधिक मुखर हो कर तेजी से अपने पैर पसार रही है। लोगों की यह धारणा कि हिंदी केवल हिंदुस्तान तक सिमट कर रह जाएगी, और अंग्रेजी के आगे अस्तित्वहीन होकर रह जाएगी, मिथ्या साबित हो रही है और वह दिन दूर नहीं जब सोशल मीडिया के सहयोग से विश्व पटल पर हिंदी अपनी अलग पहचान बनाएगी और हमारे देश का सिर गर्व से ऊँचा हो जाएगा।

आइए हिंदी सीखें
समश्रुति भिन्नार्थक शब्द

अपर्णा एम. खेडकर, कनिष्ठ अनुवादक
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

आज मैं एक ऐसे विषय पर आपके साथ कुछ चर्चा करना चाहूंगी, जिस पर अकसर हम सभी कहीं न कहीं त्रुटि करते हैं।

शिरोरेखा का महत्त्व :

हिंदी के प्रयोग में पहला, और सबसे अनिवार्य पहलू है - शिरोरेखा का प्रयोग। आज कल नई पीढ़ी में शिरोरेखा का प्रचलन लगभग समाप्त होता जा रहा है। हिंदी भाषा में शिरोरेखा का बहुत महत्त्व होता है। इसका एक अत्यंत हास्यास्पद उदाहरण आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

एक बार एक कारखाने के मालिक ने अपने कर्मचारी को एक सूचना लगाने का आदेश दिया –

क ल का र खा ना बं द र खा जा ए गा

जल्दी में मालिक शिरोरेखा लगाना भूल गया।

अगले दिन सुबह उसने कारखाने में जाकर देखा तो वह अपना सिर पकड़ कर बैठ गया। सूचना लिखी थी –

कल कारखाना बन्दर खा जायेगा।"

यह तो मात्र एक उदाहरण है। परंतु ऐसी स्थिति कभी उत्पन्न ही न हो, इसके लिए हमें शिरोरेखा का प्रयोग सदैव करना चाहिए।

समश्रुति भिन्नार्थक शब्द

- दूसरा विषय जिस पर मैं आज आपसे चर्चा करना चाहती हूँ, वह है **समश्रुति भिन्नार्थक शब्द ।** समश्रुति का अर्थ है सुनने में एक जैसा, और भिन्नार्थक का अर्थ है भिन्न अर्थ|

अर्थात ऐसे शब्द जो सुनने में एक जैसे लगते हैं, परन्तु उनके अर्थ बिल्कुल भिन्न होते हैं|

- अंस और अंश , आदि और आदी , अवधि और अवधी , कुल और कूल इत्यादि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनके अर्थ भिन्न होते हैं| सही अर्थ की जानकारी न होने पर हम अक्सर शब्दों का गलत प्रयोग कर देते हैं| इससे अनेक बार अर्थ का अनर्थ हो जाता है तथा कभी-कभी स्थिति हास्यास्पद हो जाती है|

  यहाँ मैं ऐसे ही कुछ शब्दों की सूची दे रही हूँ, जो हमारे दैनिक जीवन में अक्सर प्रयोग में आते हैं, और हम अक्सर इन्हें लिखने में त्रुटियाँ करते हैं:-

- अंस - कंधा अंश - हिस्सा
- अँगना - आँगन अंगना - स्त्री
- आदि - आरम्भ, इत्यादि आदी - अभ्यस्त
- अवलम्ब - सहारा अविलम्ब - बिना देर किए
- अवधि - समय अवधी - अवध प्रांत की भाषा
- कोष - खजाना कोश - शब्द-संग्रह
- ग्रह - सूर्य , मंगल आदि गृह - घर

• नियत	-	निश्चित या तय	नीयत	-	आतंरिक इच्छा
• नियति	-	भाग्य			
• प्रासाद	-	महल	प्रसाद	-	भगवान का भोग
• अन्न	-	अनाज	अन्य	-	दूसरा
• पुरुष	-	नर	परुष	-	कठोर
• चरम	-	अंतिम	चर्म	-	चमड़ा
• कुल	-	वंश, योग	कूल	-	नदी का किनारा

यहाँ एक उदाहरण देना अत्यधिक प्रासंगिक है:-

“नदी और नारी की तुलना बहुत बहुत अनुकूल

एक के बिगड़े कुल डूबता, एक के बिगड़े कूल”।

यह एक छोटा सा प्रयास है, हिंदी के प्रति कुछ समर्पण दिखाते हुए इस पत्रिका के माध्यम से जन सामान्य का हिंदी भाषा का ज्ञान बढ़ाने की दिशा में...

.

आदर्शवाद आज के युग में प्रासंगिक है

लता श्रीधर, स.मौ.वि. ।।
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

चरित्र की श्रेष्ठता एवं आदर्शता का नाम ही आदर्शवाद है। श्रेष्ठ और शुभाचरण का पर्याय आदर्शवाद है। सत्यवादिता, दयालुता, निष्कपटता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सदाचार, निर्भयता, शुचिता, संतोष, तप और दान आदर्शवाद के लक्षण है। सदाचारी जीवन की व्याख्या, उपयोगिता तथा अनिवार्यता सिद्ध करना आदर्शवाद का मूल है।

आदर्शवाद मानव की श्रेष्ठता की कसौटी है। जीवन की शान्ति के लिए अमूल्य वस्तु है, सत्पुरुषों का भूषण है, व्यक्ति के अमंगल का नाशक है।

आदर्शवाद मनुष्य रुपी वृक्ष का सुंदर, सुगंधित पुष्प है। सुंदर सुगन्धित पुष्प के समान ही उदात आदर्शवाद सबको अपनी ओर आकृष्ट करता है और सबको प्रसन्नता प्रदान करता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद जैसे आदर्शों के सुगंधित जीवन पुष्प आदर्शवाद के प्रमाण है।

आदर्शवाद से मानव में शूरता, वीरता, धीरता, निर्भयता आदि गुण स्वत: आ जाते हैं। सुंदर स्वास्थ्य और सुबुद्धि का विकास होता है। कठिन से कठिन कार्य को करने में सरलता का अनुभव होता है।

आदर्शवाद निर्दन का धन है। अन्य गुणों का विकास एकांत में होता है, किन्तु आदर्शवाद का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है। आदर्शवाद पृथ्वी पर मनुष्य को प्रसिद्धि प्रदान करता है, कब्र में प्रख्यात कर देता है और स्वर्ग में अमर बना देता है।

आदर्शवाद और प्रसन्नता मां-पुत्री हैं। सम्मान आदर्शवाद का पुरस्कार है। धम्मपद के अनुसार पुष्पों की सुगंध वायु के विपरित नहीं जाती, किन्तु आदर्शों

का जीवन सुगंध सभी दिशाओं में व्याप्त हो जाता है। अत: आदर्शवाद क्षणभर के लिए लज्जित किया जा सकता है किन्तु मिटाया नहीं जा सकता।

सत्संगति आदर्शवाद के निर्माण की पृष्ठभूमि है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है – सठ सुधरहि सत्संगति पाई। पारस - परस कुधातु सुहाई।। पारस के स्पर्श से जैसे लोहा स्वर्ण बन जाता है, सत्संगति से दुष्ट मनुष्य भी सुधरा जाता है। साधारण कीडा भी फूलों की संगति से बडे-बडे देवताओं और महापुरुषों के मस्तक पर चढ जाता है। महात्मा बुद्ध का संपर्क पाकर वैशाली की नगरवधू आम्रपाली का जीवन सुधर गया। महात्मा गांधी के आदर्शों के कारण युवा शक्ति बदली, राजनीती की दिशा बदली और बदला पराधीन भारत का भाग्य। इस युग के महात्मा श्री मोहनदास करमचंद गांधी – ने अछूतोद्धार का पुण्य व्रत किया, तो उनके ही शिष्य आचार्य विनोबा भावे ने भूदान, ग्रामदान, श्रमदान की ज्योति जलाई। मदर टेरेसा ने अपनी जीवन का कण-कण असहाय, पीडित समाज की सेवा में अर्पित किया। महात्मा हंसराज ने ज्ञान का स्त्रोत डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। हनुमान प्रसाद जी पोद्दार ने 'गीता-प्रेम' के माध्यम से आध्यात्मिकता का अनंत कोण समाज को प्रदान किया। श्री बालासाहेब देवरस तो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में वनवासी – कल्याण, शिक्षा-भारती, सेवा-भारती, संस्कार - भारती आदि संस्थाओं के माध्यम से समाज को समर्पित है।

'आचार: परमो धर्म:' अर्थात आचार ही सबसे बड़ा धर्म है। 'आचारहीन न पुनन्ति वेदा' – आचारहीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। चरित्रहीन साधु, संत, महात्मा तथा राजनीतिज्ञ के उपदेशों का कोई प्रभाव नहीं होता। जैसे चमकहीन मोती का कोई मूल्य नहीं, उसी प्रकार आदर्शहीन मानव किसी काम का नहीं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में –

'खलों को कहीं भी नहीं स्वर्ग है,
भलों के लिए तो यहीं स्वर्ग है।
सुनो स्वर्ग क्या है, सदाचार है,
सदाचार ही गौरवागार है'।।

कर्म का अनुशासन

संध्या रविकिरण, स.मौ.वि. ।।
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

जीवन में व्यक्तिगत और समूहगत दोनों स्तरों पर अनुशासन की अपेक्षा की जाती है। जैसे मनुष्य जीवन भर कुछ न कुछ सीखने की इच्छा रखता है। इस दृष्टि से वह सदैव विद्यार्थी रहता है। जो विद्या की इच्छा रखता है वह विद्यार्थी रहता है। विद्या पाना विद्यार्थी का कर्म है, पर यह कर्म अनुशासन के बिना अधूरा है। मानव जीवन में विद्यार्थी काल जीवन का स्वर्णिम काल है और ये विद्यार्थी काल अनुशासन रहित है तो व्यर्थ है।

व्यक्तिगत स्तर पर मन, वाणी और कर्म का अनुशासन व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाता है। मन का स्वभाव है चंचलता। जिसने इस चंचलता पर काबू पा लिया, समझ लो उसने संसार पर काबू पा लिया है। वाणी का अनुशासन सफल जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। जो लोग अपनी वाणी पर अंकुश नहीं रख पाते वे लोग संसार में न तो कभी यश प्राप्त कर पाते हैं और न ही लोकप्रियता। इसी कारण प्राचीन भारतीय शास्त्रों में शब्दों को ब्रह्म कहा गया है। असाधारण व्यक्तित्व वाले लोग वाणी को इस प्रकार अपने वश में रखते हैं कि वे जो बोलते हैं, वही सत्य हो जाता है। तुलसीदास ने भरत की वाणी का आदर्श प्रस्तुत करते हुए कहा है कि उनकी वाणी सभी के लिए सरल भी है साथ ही अगम्य भी, वह बहुत कम बोलते हैं किंतु अधिक कह जाते हैं।

यह वाणी का ही कमाल है कि लोग कौए को धिक्कारते हैं और कोयल की कु-कु बार-बार सुनना चाहते हैं।

भारतीय चिंतन में, कर्म के अनुशासन को भी बहुत महत्व दिया है। श्रीकृष्ण ने गीता में कर्मों की कुशलता को ही योग का महत्व दिया है। योग क्या है ? प्राण पर नियंत्रण रखने का अनुशासन। योग मानव जीवन का सरल

और कुशल अनुशासन है। जो हमें धरोहर के रुप में प्राप्त है। हमारा हर क्षण योगिक क्रियाओं से ओत-प्रोत है। हर प्राणी का जीवन प्राण से प्रारंभ होता है, और प्राण से संचलीत होता है, और प्राण से समाप्त होता है। इसे योग की भाषा में प्राणायम कहा जाता है। अर्थात प्राण पर नियंत्रण ही जीवन है। व्यक्तिगत स्तर पर अनुशासन निर्भर है। हर व्यक्ति 3 प्रकार के दुखों से बचना चाहता है, शारीरीक, मानसिक और वाणी दुख। जीवन प्रणाली में अनुशासन रहेगा तो दुखों से छुटकारा भी मिलेगा।

संसार उन्हीं लोगों को याद करता है – जिन्होंने अपने कर्मों को अनुशासित ढंग से पूरा किया है। कर्म के अनुशासन के बिना कोई महान नहीं बन सकता।

डॉ. अंबेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. अब्दुल कलाम और कई अनगिनत हस्तियां अपने देश में अच्छे कर्म और अनुशासन के बल पर महान हुए हैं। मार्क जूकरबर्ग जैसे सफल व्यवसायिक ने एक इंटरव्यू में कहा था, "सफलता का सच अनुशासन और सिर्फ अनुशासन है।"

"हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी

सी. राजगोपालाचारी

कुछ कदम प्रगति की ओर

सौ. वृषाली जोशी, उ.श्रे.लि.
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

एक दिन अखबार में गरीब किसानों की आत्महत्या की खबर पढ़कर मन बहुत उदास हो गया। कम बारिश होने के कारण किसानों का बहुत नुकसान हुआ था। घर में खाने वाले दस-दस लोग, खेती के लिए लिया हुआ कर्ज़। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में उन्होनें आत्महत्या की है। उनकी पत्नियाँ, बच्चे और बूढ़े माता-पिता बेसहारा हो गए थे। उनके सामने जीवित रहने के लिए बहुत सारे सवाल थे।

ऐसी परिस्थिति में उन किसानों के परिवारों की मदद करने के लिए श्री नाना पाटेकर और श्री मकरंद अनासपुरे ने नाम फाउंडेशन नाम से एक संस्था की स्थापना की है। टेलीविज़न पर प्रसारित एक कार्यक्रम में श्री नाना पाटेकर ने एक बहुत अच्छी बात कही, 'कौन सी राजनीतिक पार्टी ने क्या काम किया, या उन्हें क्या करना चाहिए.. 'इस पर चर्चा करने के बजाए, 'हम क्या कर सकते हैं?' यह सोचकर हमें काम करना चाहिए। और इसीलिए उन्होनें यह कार्य आरम्भ किया।

जिन किसानों ने आत्महत्या की है, नाम फाउंडेशन उनके गाँव में, उनके घरों में जाकर उनके परिवारों को उनके आवश्यकता की वस्तुएं तथा धन पहुँचाती है। इसके साथ ही, उनकी पत्नियों को रोज़गार भी देने की कोशिश करती है। इससे उन परिवारों को मदद होती है।

नाम फाउंडेशन ने एक करोड़ पेड़ लगाने का भी एक सराहनीय कार्य शुरू किया है। इसके लिए वे किसानों को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन भी दे रहे हैं। इससे किसानों को रोज़गार मिलने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी होगा।

नाम फाउंडेशन ने यह कार्य करके वास्तव में यह साबित किया है कि हम सामान्य जन भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार ज़रूरतमंद व्यक्तियों को मदद पहुँचा कर उनको कठिन परिस्थिति से बाहर निकालने में अपना योगदान दे सकते हैं। जिस प्रकार **बूंद-बूंद से सागर भर सकता है**, उसी प्रकार हम सबके छोटे-छोटे प्रयास मिलकर एक बड़े जनमानस की परेशानियाँ दूर कर सकते हैं।

हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन का अभियान भी शुरू किया है। हम सब अपने घर, अपने आस-पास के परिसर, अपने कार्यालय में अपने बैठने के स्थान आदि को हर दिन स्वच्छ रखने का संकल्प ले सकते हैं। अगर हर भारतीय यह संकल्प ले लेगा तो पूरा भारत हमेशा स्वच्छ रहेगा। भारत देश, अत्यंत विशाल जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद पूरे विश्व में एक अलग मिसाल बन सकता है और स्वच्छ भारत के नाम से पहचान बना सकता है।

वर्षा के मौसम में हमेशा सड़कों पर पानी भर जाता है। पुणे में खडकवासला, पानशेत तथा वरसगाँव के बाँध अधिक वर्षा में भर जाते है, फिर उन बाँधों से मुठा नदी में पानी छोड़ा जाता हैं। पानी बह जाने के बाद बहुत सी प्लास्टिक की थैलियाँ दिखाई देती हैं। सरकार व्दारा बारबार प्लास्टिक के प्रयोग पर रोक लगाने के बावजुद हम सब इसका प्रयोग करते है।

मुबंई शहर में 26 जुलाई, 2005 को हाई टाइड और तेज़ बारिश के कारण बाढ़ आई थी। तब मुम्बई के बहुत से रास्ते प्लास्टिक कचरे के कारण बंद हो गए थे, जिस कारण जान-माल की बहुत हानि हुई थी।

प्लास्टिक का पर्यावरण पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है। प्लास्टिक ज़मीन पर बहुत ही हानिकारक रसायन छोड़ता है जो भूजल में जमा होता है। प्लास्टिक कचरा अपघटित होने में हज़ारों वर्ष लगते हैं। प्लास्टिक में इस्तेमाल होने वाले रसायन वायु को दूषित करते हैं। पशु-पक्षी अकसर इन्हें खा लेते हैं जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। समुद्र में फेंका गया प्लास्टिक कचरा समुद्री

जीव खा लेते हैं जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार प्लास्टिक पूरे पर्यावरण के लिए हानिकारक है। अगर हम संकल्प करें की हम प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करेगे, और हमेशा अपने साथ कपड़े का थैला रखेगें, तो बहुत कुछ हो सकता है।

इसलिए हम आज ही संकल्प लें कि हम आज ही से अपने घर में, घर के आस-पास, कार्यालय में, कहीं से भी अपने आप छोटे-छोटे अच्छे कार्य करने की शुरूआत करें। छोटे से छोटा कार्य भी एक बड़े अच्छे कार्य का भाग बनके बहुत बड़ा बन सकता है और देश की प्रगति की ओर एक बड़ा कदम बन सकता है।

इस प्रकार हमारे उपरोक्त सभी प्रयत्न हमारे देश को प्रगति की ओर ले जाने में सार्थक भूमिका निभा सकते हैं।

मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है"

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

धन के देवता कुबेर पूजा से वंचित क्यों?

सुष्मिता घोष, उ.श्रे.लि.
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

कुबेर को धन का देवता कहा गया है, परन्तु भारत में विष्णु-पत्नी लक्ष्मी की ही पूजा की जाती है| कहा जाता है कि पूर्व जन्म में कुबेर एक चोर थे| एक बार चोरी के इरादे से शिव मंदिर में घुस गए| तत्कालीन समय में मंदिरों में बहुत खजाना रहता था| उसे ढूँढने के लिए कुबेर ने दीपक जलाया, परन्तु हवा के कारण दीपक बुझ गया| कुबेर ने फिर जलाया, परन्तु दीपक फिर बुझ गया| जब यह प्रयास कई बार चला तो भोलेनाथ ने समझा कि भक्त बहुत परिश्रम कर रहा है| अतः वे प्रकट हुए और प्रसन्न होकर अगले जन्म में कुबेर को धनपति होने का आशीर्वाद दिया|

कुबेर के संबंध मे प्रचलित है कि उनके तीन पैर और आठ दांत हैं| अपनी कुरूपता के लिए वे प्रसिद्ध हैं| उनकी मान्यता चोरों, लुटेरों और ठगों के सरदार के रूप में होती है| इन बातों से स्पष्ट है कि धनपति होने पर भी कुबेर का व्यक्तित्व और चरित्र वैसा नहीं था जैसा विष्णु-प्रिया लक्ष्मी, अर्थात धन की देवी का|

कुबेर रावण के कुल कुल के बताए गए हैं| कहते हैं कि सोने की लंका कुबेर की ही थी तथा रावण ने उसको भगा कर इसे अपने अधिकार में कर लिया था| रावण ने भी अपनी करतूतों से बहुत सा धन इकट्ठा किया और इसे घड़ों में रखकर जमीन में गाड़ दिया| अपनी प्रजा से रक्त भी वसूल करके वह इसे जमीन में घड़ों के अन्दर रखता था| जब उसके पाप के घड़े भर गए तो उन्हीं घड़ों से माता सीता का जन्म हुआ और वे उसके विनाश का कारण बनीं| ऐसे रावण के अग्रज कुबेर कैसे रहे होंगे और धन कैसे बटोरा होगा, समझा जा सकता है|

कुबेर को राक्षस के अतिरिक्त यक्ष भी कहा गया है| यक्ष धन का रक्षक होता है, उसे भोगता नहीं है| कुबेर भी धन के रक्षक व प्रहरी हैं| पुराने मंदिरों के बाहर कुबेर की मूर्तियाँ इसलिए बनी होती थीं ताकि मंदिरों के धन की रक्षा हो सके| कौटिल्य ने भी खजानों में कुबेर की मूर्ति रखने का उल्लेख किया है| शुरू के अनार्य देवता कुबेर के कुरूप व्यक्तित्व को नहीं खपा सके| वे देवताओं के खजांची होते हुए भी द्वितीय स्थान पर रहे और माता लक्ष्मी के समकक्ष नहीं ठहर सके| फलस्वरूप लक्ष्मी के पूजन की परम्परा कायम हो गयी और लोग कुबेर को पूजने से कतराने लगे| लक्ष्मी के साथ मंगल का भाव भी जुड़ गया| वे धन संचित रखती हैं और चंचला भी हैं| अपने सद्गुणों के चलते सब लोगों की आराध्य देवी लक्ष्मी हो गईं और लोग उनकी पूजा करने लगे|

कुबेर धन के खजाने के रूप में भौतिक व स्थायी हैं| कुबेर का निवास वट वृक्ष पर बताया गया है| ऐसे वृक्ष घर के आँगन में न होकर गाँव के बाहर तथा गाँव के केंद्र में होते हैं| इसलिए इस पेड़ को धनगडा भी कहा जाता है|

“हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है”

सुमित्रानंदन पंत

“सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

क्यों करते हैं हम क्रोध?

सी.पी.विजयाकुमारी, सहायक
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

कहते हैं कि क्रोध आवेश से आरम्भ होकर पश्चाताप पर समाप्त होता है| बर्दाश्त के बाहर या वांछित स्थिति न होने पर, या विपरीत परिस्थिति के प्रति ऊर्जा का विस्फोट क्रोध के रूप में बाहर आता है, और उस समय हम अपना विरोध जताने के लिए जो भी हरकत करते हैं या कहते हैं, वह क्रोध का ही परिणाम होता है|

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था की जिद करो तो सत्य की| उस जिद को उन्होंने सत्याग्रह नाम दिया था, और उसमे क्रोध कहीं नहीं था|

क्रोध को यदि नियंत्रित न किया गया तो यह एक आदत बन जाती है और फिर अपनी हर छोटी – बड़ी इच्छा को मनवाने के लिए हम इसका इस्तेमाल ब्लैकमेल करने की हद तक करने लगते हैं, और सामने वाले व्यक्ति को लगता है की इसकी बात नहीं मानी तो यह क्रोध में कुछ भी करेगा| अकसर बच्चे अपनी कोई भी बात मनवाने के लिए माता-पिता पर क्रोध करते हैं और अपनी हर बात मनवाने के लिए उन्हें विवश करते हैं| यदि हम उस समय उनकी हर जरूरी या गैर जरूरी बात को न मानें तो वे समझ जाएंगे कि यह हथियार काम नहीं आ रहा है, और वे क्रोध करना कम कर देंगे|

मानसिक दृढ़टा जितनी अधिक होती है, क्रोध पर संयम रखना उतना ही अधिक आता है|

क्रोध का एक और भयावह पहलू है कि क्रोध कभी अकेले नहीं आता है| बड़े-बूढ़े कहते हैं कि क्रोध हमेशा अपना परिवार साथ लेकर आता है| क्रोध की

बहन जिद है| व्यक्ति यदि शांत होना भी चाहे, बहन उसे याद दिलाती रहती है (आज हो जाए आर-पार.. आज दबे तो हमेशा दबना पड़ेगा... आदि)| क्रोध की एक और आत्मीय रिश्तेदार है उसकी पत्नी हिंसा| हिंसा का अस्तित्व क्रोध के बिना नहीं होता| कोई शांत व्यक्ति कभी हिंसा नहीं करता| क्रोध का भाई है अभिमान| बार बार उसे याद दिलाता है कि भाई.. इज्जत का सवाल है| क्रोध की बेटियाँ हैं- ईर्ष्या, निंदा, चुगली आदि| हमने कभी किसी शांत व्यक्ति के अन्दर ये गुण नहीं देखे होंगे|

यह एक सत्य है की अग्नि केवल उसी को जलाती है, जो उसके पास जाता है, परन्तु क्रोधाग्नि तो सारे कुटुंब को जला डालती है|

क्रोध आने पर हमारी सोचने समझने की शक्ति क्षीण पड़ जाती है और हम अनाप-शनाप बोलने लगते हैं| हमें हर सही बात भी गलत लगती है| रक्त संचार बढ़ जाता है जिससे रक्तचाप बढ़ जाता है, मस्तिष्क की नसें फूल जाती हैं, ह्रदय पर भी प्रभाव पड़ता है|

इसलिए मै आज आप सबसे यह प्रश्न कर रही हूँ की क्यों करते हैं हम क्रोध? क्या इसका कोई स्थाई लाभ है? केवल क्षणिक लाभ के लिए हम अपने शरीर और मन दोनों के साथ खिलवाड़ क्यों करते हैं?

इसलिए आज मैं एक बार फिर आपको बुजुर्गों की दी गयी कुछ सीखें याद दिलाना चाहती हूँ- क्रोध को नम्रता से परास्त करो, क्रोध आए तो 10 बार सोचो और उसके परिणाम पर सोचो तब बोलो, और विवेक तथा सब्र का साथ कभी मत छोड़ो और कोशिश करो कि क्रोध आने पर शांत रहो, अपना ध्यान किसी और काम में लगाओ, क्योंकि क्रोध की सर्वश्रेष्ठ औषधि मौन है|

तीसरी आँख

आर.एस. चौरिशी, सेवा निवृत्त स.मौ.वि ॥
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

इसका महत्व आधुनिक काल में दिन – प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जिस एंगल से हम देख नहीं पाते हैं, उस एंगल से देखने का कार्य तीसरी आँख का है।

प्राचीनकाल से भोलेनाथ को तीसरी आँख को देवता माना गया है (त्रिनेत्रधारी) जिसका मतलब जो किसी को दिखाई नहीं देता, उसे देखने का काम स्वयं भगवान करते हैं। सीमित शब्दों में यह कहा जाता है कि निगरानी रखने का कार्य तीसरी आँख होता है।

क्रिकेट के खेल में तीसरा अंपायर जो भूमिका निभाता है, वह नज़दीक से खिलाड़ी के खेल की निगरानी रखता है। कौन सा खिलाड़ी नियमानुसार आऊट है या नहीं यह बताने का काम सी.सी.टी.वी करता है, तथा उस रेकॉर्डिंग को दोबारा धीमी गति से देखा जा सकता है।

निगरानी किसी व्यवस्था का प्रमुख कार्य होता है। वह नियोजन की बुनियाद होता है। निगरानी अत्यंत क्लिष्ट, व्यापक और गतिशील प्रक्रिया है। इस दृष्टि से, निगरानी हेतु अत्याधुनिक तंत्र और साधनों का सूक्ष्म विचार करना जरूरी है।

कार्यालय के कर्मचारियों पर निगरानी क्यों होनी चाहिए? ..... निगरानी रखने का प्रमुख उद्देश्य होता है उनके कार्य की खामियों और गलतियों को सुधारना, ताकि भविष्य में उसकी संभावना न हो। निगरानी या नियंत्रण रखने के बजाए, कर्मचारियों पर विश्वास रख कर, उन पर योग्य जिम्मेदारी डालने से

तथा उनकी कठिनाइयों का निराकरण करने में व्यवस्था से सुसंवाद होना अत्यंत जरूरी है।

नियंत्रण की व्यवस्था – हेब्री फेयाल के मतानुसार स्वीकृत योजना, योग्य सूचना और कार्य पद्धति के अनुसार कार्य हो रहा है या नहीं, यह भी देखना है। भाँपना, नियंत्रण की व्याख्या में आता है। नियंत्रण का मुख्य उद्देश्य, कार्य में उत्पन्न खामियाँ और गलतियाँ ठीक करके भविष्य में इससे छुटकारा पाने के लिए निर्देश देना होता है। कुंटझ और ओडोनिल के शब्दों में नियंत्रण का मतलब उद्योगों में कार्यांवित योजना तथा निर्धारित लक्ष्य ठीक दिशा में चल रहे हैं या नहीं, इसका मूल्यांकन करना और त्रुटियोंको हटाना है।

नियंत्रण की विशेषताएं - नियंत्रण किसी भी व्यवस्थापन का मूलभूत कार्य है। यही उसकी योजना की बुनियाद है। यह प्रकिया गतिशील एवं व्यक्तिनिष्ठ होती है। इसका प्रयोग कर्मचारियों को मार्गदर्शन या अधिकार प्रदान करता है। इसके प्रयोग में हर आस्थापना में सभी स्तरों पर (उच्च, मध्यम और निम्न स्तर पर)होना ही विशेषता है।

नियंत्रण का शास्त्रीय अंदाज / दि्द्ष्टकोण – इसकी कार्यपध्दति के चार विभाग होते हैं।

1) प्रमाण की निश्चिती करना
2) कार्य की गिनती करना
3) प्रमाणित कार्य और प्रत्यक्ष कार्य की तुलना करना
4) सुधार लाना या गलतियों को हटाना

अच्छे व्यवस्थापन में नियंत्रण पध्दति तथा आवश्यक लक्ष्य प्राप्ति संस्थानुसार बदलती रहती है।

इस प्रकार नियंत्रण क्षेत्र निश्चित किए बिना निगरानी असंभव होती हैं। प्रसिध्द व्यवस्थापन तज्ञ होल्डन, फिश और स्मिथ ने 13 आवश्यक नियंत्रण क्षेत्र बतलाएं हैं। कर्मचारियों पर नियंत्रण सभी विचार प्रणालियों में समान है।

कैमरे का दर्द – सबसे प्रचलित साधनों में कैमरे का प्रयोग अनेक आस्थापनाओं में दिखाई पड़ता है। इसके माध्यमसे कौन सा कर्मचारी, किस में क्या काम कर रहा है, यह व्यवस्थापक टी.वी. के स्क्रीन पर, या मोबाईल के स्क्रीन पर देअख सकता है, काम के संबंध में या फिर किसी व्यक्ति विशेष के बारे में इसका अंदाज नहीं मिलता है।

कैमरे के दुष्परिणाम – कैमरा विशेष क्षेत्र में लगाए जाने पर कुछ कर्मचारियों में अनावश्यक तनाव पैदा होता है। जो कर्मचारी ईमानदारी से काम करते हैं, उन्हे कैमर की मौजूदगी से कोई फर्क नहीं पड़ता।

निष्कर्ष – कर्मचारियों पर नियंत्रण रखना कुछ गैर नहीं, परंतु कैमरे के अलावा भी इससे कम खर्च में अन्य साधनों द्वारा नियंत्रण रखा जा सकता है। कर्मचारियों का विश्वास सम्पादन करते हुए अगर उन पर कोई जिम्मेदारी डाली जाए, तो उनकी कार्यक्षमता निश्चित रूप से वृद्धिगत हो सकेगी। इसका फायदा उस कार्यालय को अवश्य होगा। किसी घटना विशेष की जाँच करने में सी.सी.टी.वी. सहायक हो सकता है, परंतु यह भी देखा गया है कि कई मामलों में यह फुटेज अस्पष्ट होने के कारण, घटना का निदान संभव नहीं हो पाता है। कोई अपराधी को पकड़ना कुछ हद तक ही संभव होता है।

नानी माँ की बात सुनो.....
आयुर्वेदिक दोहे (संकलन)

मानिनी दास, सहायक
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

कफ़ से पीड़ित हों अगर, खाँसी बहुत सताय,
अजवाइन की भाप लें, कफ़ तब बाहर आए|

ठण्ड अगर लग जाए जो, नहीं बने कुछ काम,
नियमित पी लें गुनगुना, पानी दे आराम|

पीता थोड़ी छाछ जो, भोजन करके रोज़,
नहीं जरूरत वैद्य की, चेहरे पर हो ओज|

मधु का सेवन जो करे, सुख पावेगा सोय,
कंठ सुरीला साथ में, वाणी मधुरिम होय|

बीस मिली रस आँवला, पाँच ग्राम मधु संग,
सुबह शाम में चाटिये, बढे ज्योति सब दंग|

कंचन काया को कभी, पित्त अगर दे कष्ट,
घृतकुमारि संग आंवला, करे उसे भी नष्ट ||

तुलसी दल दस लीजिए उठ कर प्रातःकाल,
सेहत सुधरे आपकी, तन-मन मालामाल ||

थोड़ा सा गुड लीजिए दूर रहें सब रोग,
अधिक कभी मत खाइए, चाहे मोहनभोग |

मुझे उस जहाँ की तलाश है

डॉ शिरीष खेडिकर, मौसम वैज्ञानिक श्रेणी 2
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

जहाँ जीने की आस हैनहीं कोई किसी का मोहताज है,
जहाँ पापियों का सर्वनाश है मुहे उस जहाँ की तलाश है,|

हैं हज़ारों मुल्क इस दुनिया मेंदूजे के खून के प्यासे हैं-एक,
जो समझते हैं जिन्हें अपना दुश्मनवो तो उनके दोस्तो, से ज्यादा प्यारे हैं|

कोई धर्मों से बन रहा समाज हर कोई खुद को बड़ा मानता है,
सब एक ही बाप की औलाद हैं ये कोई नहीं जानता है,|

रोज़ लुटती अबलाओं की इज्जत और कानून यहाँ अँधा है,
न्याय की गुहार लगायें किससे इसी पे तो चलता उनका धंधा है,|

रिश्वत के सिवा काम नहीं होते चोर और ,खूनी यहाँ पर नेता हैं
हम उन्हें गलत कैसे कहें हमारा समाज ही उन्हें वोट देता है,।

ऊँचबड़ी फुरसत से हमने बनाई है , पात की दीवार-जात,नीच-
ज़िन्दगी भर जिसके लिए लड़ेबाद भी काम न आई है मरने के,।

चोर डाकू हों समाज में , या हों खुनी लुटेरे ,बड़ी शान से जीते हैं
पुलिस के पास जाएँ भी तो कैसे वो तो साथ ,में बैठ के पीते हैं।

आजादी के लिए लड़े और मरे उनके नाम कोई नहीं जानते हैं,
कई फर्जी स्वतंत्रता सेनानी तो आज भी आरक्षण मांगते हैं।

दादा ने देश के लिए कुछ किया था इसलिए पोते आज भी वोट मांगते हैं,
जनता के लिए कितना भी कुछ करो, फिर भी चुनाव के दिन वो नोट मांगते हैं।

सर सलामत तो पगड़ी पचास ऐसा हर कोई यहाँ मानता है

अपना फायदा पहले देखते हैं देश का नाम कौन जानता है।

चाहे गोली लगे पीठ पर, कायर भी यहाँ शहीद कहलाते हैं

ये तो ऊपर वाले को ही मालूम, कौन लड़ते कौन पीठ दिखाते हैं।

अगला जनम आरक्षित जाति में ही देना, हर कोई ये दुआ करते हुए मरता है

पढाई और नौकरी फ़ोकट में मिल जाती है और समाज भी उन्हें कुछ कहने से डरता है।

ज़मीर बेच कर जी रहे हैंन्दा लाश हैंसब यहाँ जि,

दूर कहीं ले चल यहाँ सेमुझे उस जहाँ की तलाश है,।

मुझे उस जहाँ की तलाश है.....

"हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता

पंडित गोविंद बल्लभ पंत

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है

कमलापति त्रिपाठी

बारिश, धरती और वह दोनों

अरुण शेलके, सहायक
मौ.वि.उ.म.नि. (सतह उपकरण)

वह कहती है

बारिश है नदी की धारा
बारिश से ही है जीवन सारा
बारिश है मिट्टी की साँस
बुझाती है सबकी प्यास।

वह कहता है

बारिश है बस कीचड़
जीवन को देता है उजाड़
बारिश है रोग की जड़
मचाती है बस भगदड़

बारिश है धरती का सिंदूर
लहराती है पूरी धरोहर

उजाड़ देती है पूरा चमन
बहा देती है चैन ओ अमन।

उनका यह झगड़ा चलता ही रहता है
शाम ढलती है पर समेट नहीं होता है।

रात होती है वह उसे पास लेता है,
धीरे-धीरे मदहोश करता है।

वह सोचती है

इसे बारिश बिल्कुल नहीं भाती,
पर बारिश सा ही उतावला होता है यह
बात समझ में नहीं आती।
दूर होती है सब दूरियाँ
मिट जाती हैं सब खामियां

छोड़कर सब रंजिश,
वह बनती है धरती और वह बनता है बारिश।

सपनों की दुनिया

वि. यु. देशपाण्डे, स.मौ.वि. ।।
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

मनुष्य प्राणी सृष्टि पर एक सपनों की दुनिया में जीवन व्यतीत करता है। हर एक मनुष्य प्राणी जो ऊंचे सपने देखता है, वह हिम्मत और कोशिश से खुद की और राष्ट्र की भी प्रगति करता दिखाई देता है।

सपनों की व्याख्या करना एक सिद्धांत है 'जेनेटिक रिहर्सल', जिसके अनुसार जब हम स्वपनावस्था में होते हैं तो हमारा शरीर शांत पडा होता है। अगर साँस पर गौर किया जाए तो निद्रावस्था और श्वासावस्था में कोई बडा भेद है ही नहीं । संभवत: इसलिये मृत्यु को महानिद्रा या चिरनिद्रा भी कहा गया है। असल में मस्तिष्क का एक भाग ऐसा है जो नींद के दौरान माँसपेशियों की सक्रियता पर काबू किए रहता है। अगर ऐसा नहीं होता तो हम घातक स्वपन देखने के दौरान खुद पर ही हमला कर देते।

सपने विविध विषयों से संबंधित होते हैं।

i) सपने अर्थपूर्ण होते हैं।
ii) सपनों के दौरान मस्तिष्क कोशिकाओं के बीच संपर्क होता है।
iii) स्वयं इच्छा से मस्तिष्क संचालन सहज नहीं है।
iv) सपने में आत्मनिर्भरता होती है।
v) नींद के अभाव से सपने आते हैं।
vi) कुछ सपने मीठे तथा विशिष्ट होते हैं।
vii) सपनों के दौरान ऊँची उड़ान महसूस होती है।
viii) रहस्यपूर्ण होती है सपनों की दुनिया।
ix) गहरी नींद में स्वपन का अवलोकन होता है।
x) आदमी का स्वभाव है, सपनों में जियो और सपने देखो।

"The best way to make dreams come true is to wakeup"

"सही तरीका सपनों को साकार करने का यही है कि जागो"

खुशी

हरीश देशमुख, सहायक

मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

हर किसी को खुशी की तलाश है.....

कोई सवालों में खुशी ढूंढता है

कोई जवाबों में खुशी ढूंढता है

कोई अखबारों में खुशी ढूंढता है

कोई किताबों में खुशी ढूंढता है

कोई ख़यालों में खुशी ढूंढता है

कोई ख़्वाबों में खुशी ढूंढता है

कोई कुछ नया करने में खुशी ढूंढता है

कोई तज़ुर्बों में खुशी ढूंढता है

कोई महफ़िलों में खुशी ढूंढता है

कोई तनहाई में खुशी ढूंढता है

कोई ऊँचाई में खुशी ढूंढता है

कोई गहराई में खुशी ढूंढता है

कोई रूठने में खुशी ढूंढता है

कोई मनाने में खुशी ढूंढता है

कोई माने या न माने, लेकिन हर कोई

जमाने में खुशी ढूंढता है

किसी को हर बात में परेशानी नज़र आती है, तो

कोई ग़म में भी मुस्कुराने में खुशी ढूंढता है

हर किसी को खुशी की तलाश है.....

मेरा परिवार

मीरा उमाशंकर, स.मौ.वि. ।।
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

सुन्दर था एक घर हमारा पांच बेटों का था बसेरा
एक ने सोचकर बाहर कदम डाला निकल के बाहर बना निराला
बाकी ने पूछा न उसका हाल पर बन गया वह सबसे मालामाल
चला गया वह, बहुत ही दूर हो गया वह, तब से हुआ बडा मशहूर
बचे चार भाई बस लड़ते रहे पर एक ही घर में रहते रहें
धन राशि जब ज्यादा न थी तो लड़ाई की भी सीमा कम ही रही
भाईयों का जब बढ़ा परिवार संगणक का हुआ काम का त्यौहार
जब अगली पीढी आयी तो नई स्फूर्ति लायी
कुछ समझ में और कुछ समझ न आयी
हस्त चलित जब काम होता तो वह समय पर और सही था
पर संगणक समझने तक कभी देर से और कभी गलत भी
इसके दौरान सभी कोशिश करते रहते परिवार की कैसे सफलता बढ़ाते
नई पीढी ने नयापन लाया अपना समझकर आगे बढाया
एक भाई ने स्वचालीकरण का दौर लाया उपकरणों और वह दोनों का आया सवेरा
बस वही लाभ लाता और खुश हो जाता बाकी भाईयों को दूर ही रखता
जब पैसा हो अपना साथ, कौन करता है किससे बात?
बस अब रह गये सिर्फ पुराने लोग हुए निराश या पकड़ा रोग
मैं भी हूं इस परिवार में मिट गयी सारी ख्वाइशें
यह ऑफिस, ही मेरा परिवार है अब आप समझ गए यह सब क्या है ?

एक सवाल

एस.के.नायर, प्रशा.अधि.॥।
मौ.वि.अ.म.नि.(अनुसंधान) कार्यालय

यह सवालों का दौर है.... यह सवालों का दौर है....
हर कोई सवाल कर रहा है
हर बच्चा सवाल कर रहा है
हर माँ बहन सवाल कर रही है
हर युवक सवाल कर रहा है
उरी में शहीद हुए जवानों की विधवाएं और बच्चे सवाल कर रहे हैं
कश्मीर में शहीद सैनिकों के परिवार गण सवाल कर रहे हैं
मुबंई बम ब्लास्ट, संसद हमले में मारे गए मासूम,
हेमंत करकरे, मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, हवलदार तुकाराम उम्बले के सहमते हुए साथी सवाल कर रहे हैं
भारत माँ भी यही सवाल कर रही है
ऐ नापाक देश के कायर जनरलों, कब तक गोलियाँ बरसाओगे?
कब तक इस देश के नौजवानों के हाथ पत्थर बम और बंदूक थमाओगे?
कब तक इस देश में खून की होली खेलेंगे?
बस अब बहुत हो गया.....
बस अब बहुत हो गया.....
अब सब्र की सीमा टूट रही है
अब तुम सुनो यह एक सौ पच्चीस करोड़ देशवासियों की आवाज़ सुनो यह हमारी ललकार सुनो
आज, कल और परसों ही नहीं, आने वाले हज़ारों बरसों
चाहे आतंकवाद रहे या न रहे, कश्मीर हमेशा हमारा रहेगा...

जय हिंद

बेटियाँ

प्रदीप बुधकर, स.मौ.वि.॥
मौ.वि.उ.म.नि.(सतह उपकरण), पुणे

ओस की एक बूंद सी होती हैं बेटियाँ,
स्पर्श खुरदुरा है तो रो देती हैं बेटियाँ।

रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को,
दो दो कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ।

कोई एक दूजे से कम नहीं,
हीरा है बेटा तो मोती हैं बेटियाँ।

काँटों की राह पर खुद चल देती हैं बेटियाँ,
पर औरों के लिए फूल खिलाती हैं बेटियाँ।

विधि का विधान है यही, दुनिया की रस्म है यही,
मुट्ठी में भरे नीर सी होती हैं बेटियाँ॥

भा.मौ.वि.वि., पुणे की उपलब्धियाँ

पिछले एक वर्ष के दौरान भा.मौ.वि.वि., पुणे के निम्नलिखित अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा प्राप्त विशेष उपलब्धियोंका विवरण निम्नलिखित है :

1. श्रीमती सुनिता एस, वैज्ञानिक 'ई' को वर्ष 2015-16 हेतु विभाग की ओर से सर्वश्रेष्ठ कार्मिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2. श्रीमती प्रीता ए मेनन, वैज्ञानिक सहायक को वर्ष 2015-16 हेतु विभाग की ओर से सर्वश्रेष्ठ कार्मिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

3. डॉ. प्रकाश खरे, वैज्ञानिक 'ई' ने माह अप्रैल, 2016 में सी.डब्ल्यू.पी.आर.एस. पुणे में "जल मौसम विज्ञान" विषय पर हिंदी में व्याख्यान दिया।

4. डॉ. प्रकाश खरे, वैज्ञानिक 'ई' ने माह अप्रैल, 2016 में मौसम विज्ञान के महानिदेशक कार्यालय में आयोजित वैज्ञानिक संगोष्ठी में "जलवायु परिवर्तन - सम्भावित परिणाम परिणाम एवं निदान" विषय पर हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण दिया।

5. श्रीमती लता श्रीधर, स.मौ.वि. ॥ ने माह अप्रैल, 2016 में मौसम विज्ञान के महानिदेशक कार्यालय में आयोजित वैज्ञानिक संगोष्ठी में "भूमंडलीय उष्णन" विषय पर हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण दिया।